भक्ति-धारा

कवि परिचय – सूरदास कृष्णभक्ति धारा के प्रमुख कवि हैं। इनका जन्म सन् 1478 ई. में रुनकता या रेणुका क्षेत्र में माना जाता है। कुछ विद्वान इनका जन्म दिल्ली के निकट सीही गाँव में मानते हैं। किशोरावस्था में ही ये मथुरा चले गए और बाद में मथुरा और वृन्दावन के बीच गऊघाट पर रहने लगे। एक बार वल्लभाचार्य गऊघाट पर रुके। सूरदास ने उन्हें स्वरचित एक पद गाकर सुनाया। बल्लभाचार्य ने इनको कृष्ण की लीला का गान करने का सुझाव दिया। ये वल्लभाचार्य के शिष्य बन गए और कृष्ण की लीला का गान करने लगे।

ऐसी मान्यता है कि सूरदास जन्मांध थे पर उनके मर्मस्पर्शी चित्रण को देखकर इस बात पर विश्वास नहीं होता, सूरदास के पदों का संकलन 'सूरसागर' है। 'सूरसारावली' और 'साहित्य लहरी' अन्य रचनाएँ हैं। इनमें से 'सूरसागर' ही उनकी अक्षय कीर्ति का आधार ग्रन्थ है। मान्यता है कि सूरसागर में सवा लाख पद हैं पर अभी तक लगभग दस हजार पद ही प्राप्त हुए हैं।

सूरदास प्रेम और सौन्दर्य के अमर गायक हैं। उन्होंने मुख्यत: वात्सल्य और शृंगार का ही चित्रण किया है लेकिन वे इस क्षेत्र का कोना-कोना झाँक आए हैं। बाल जीवन का कोई ऐसा पक्ष नहीं है जिस पर कवि की दृष्टि न पड़ी हो, गोपियों के प्रेम और विरह का वर्णन भी बहुत आकर्षक है। संयोग और वियोग दोनों का मर्मस्पर्शी चित्रण सूरदास ने किया है। इन्होंने एक रस के अंतर्गत नए-नए प्रसंगों की उद्‌भावना की है। इनके सूरसागर में गीतिकाव्य के भीतर से महाकाव्य का स्वरूप झाँकता हुआ प्रतीत होता है। सूरसागर का भ्रमरगीत प्रसंग सबसे चर्चित है। इस प्रसंग में गोपियों के प्रेमावेश ने ज्ञानी उद्धव को प्रेमी एवं भक्त बना दिया है। सूर के काव्य की सबसे बड़ी विशेषता है इनकी तन्मयता। वे जिस प्रसंग का वर्णन करते हैं उसमें आत्मविभोर कर देते हैं।

सूरदास की भक्ति मुख्यत: सख्यभाव की है परन्तु उनमें विनय, दाम्पत्य और माधुर्य भाव का भी मिश्रण है। सूरदास का सम्पूर्ण काव्य संगीत की राग-रागनियों में बँधा हुआ पद-शैली का गीत काव्य है। उसमें भाव साम्य पर आधारत उपमाओं, उत्प्रेक्षाओं और रूपकों की छटा देखने को मिलती है। उनके पदों में ब्रजभाषा का बहुत ही परिष्कृत और निखरा हुआ रूप देखने को मिलता है। माधुर्य की प्रधानता के कारण इनकी भाषा बड़ी प्रभावोत्पादक हो गई है। व्यंग्य, वक्रता और वाग्वैदग्धता सूर की भाषा की प्रमुख विशेषताएँ हैं। उनका काव्य वस्तुत: 'मानव प्रेम का जयगान' है।

इनकी मृत्यु सन् 1583 ई. के लगभग मानी जाती है।

कवि परिचय – मलिक मुहम्मद जायसी का जन्म सन् 1492 ई. में जायस नामक ग्राम में माना जाता है। ये निर्गुण भक्ति के प्रेममार्गी शाखा के प्रतिनिधि कवि हैं। ये सूफी कवि थे। जायसी ने अपने दो गुरुओं का उल्लेख किया है, एक सैयद अशरफ और दूसरे शेख मुहीउद्दीन। सूफी फकीरों के अलावा जायसी ने कई साधुओं के सत्संग का भी लाभ उठाया। जायसी के तीन ग्रन्थ मिलते है 'पद्‌मावत' 'अखरावट' और 'आखिरी कलाम'। इनमें पद्‌मावत अत्यंत चर्चित है और यही उनकी अक्षय कीर्ति का आधार है।

जायसी निर्गुण ब्रह्म के उपासक थे और उसकी प्राप्ति के लिए प्रेम की साधना में विश्वास रखते थे। इस प्रेममार्ग में उन्होंने विरह पर सर्वाधिक बल दिया। अपने प्रिय (ईश्वर) के वियोग की तीव्रतम अनुभूति भक्त को साधना पथ पर अग्रसर होने को प्रेरित करती है। पद्‌मावत में प्रेमगाथा परम्परा अपने उत्कर्ष पर पहुँची है। पद्‌मावत एक प्रबंध काव्य है। इसमें कवि ने रानी पद्‌मावती और राजा रत्नसेन की प्रेमकथा को आधार बनाकर प्रेम की मार्मिक झाँकी प्रस्तुत की है। पद्‌मावत में एक ओर तो इतिहास और कल्पना के सुन्दर संयोग का निरूपण है तो दूसरी और इसमें आध्यात्मिक प्रेम की अत्यंत भावमयी अभिव्यंजना है। इसी प्रकार की रचनाओं को 'प्रेमाख्यान' कहा गया है।

सूफी प्रेम पद्धति के निर्वाह के लिए जायसी ने अपने काव्य में अप्रत्यक्ष सत्ता के संकेत भी दिए हैं। सभी सूफी कवियों ने अपने कथानकों की नायिकाओं को ईश्वर का प्रतीक माना है, जायसी की दृष्टि से पद्‌मावती ब्रह्म सत्ता का प्रतीक है। इसी कारण वे पद्‌मावती के माध्यम से जगह-जगह परोक्ष सत्ता की ओर संकेत करते हैं। वस्तुत: कवि की वृत्ति ऐसे स्थलों पर रमी है जहाँ मानवीय प्रेम के सहज रूप का चित्रण हुआ है। इस अर्थ में 'नागमती का वियोग वर्णन' हिन्दी साहित्य में अद्वितीय है। जायसी का विरह वर्णन अत्यंत विशद् एवं मर्मस्पर्शी है।

जायसी ऐसे संवेदनशील कवि थे। जो जायस में एक साधारण किसान की हैसियत से रहते थे। उनके द्वारा प्रयुक्त उपमा, रूपक, लोकोक्तियाँ, मुहावरे यहाँ तक कि काव्य भाषा की भंगिमा पर भी किसान जीवन की छाप है। कवि पद्‌मावत की कथा के लिए ही नहीं 'बारहमासा' जैसे मार्मिक प्रसंगों की उद्‌भावना के लिए भी लोक संस्कृति का आश्रय लेता है।

जायसी की भाषा ठेठ अवधी है और इसकी रचना, दोहा-चौपाइयों की छंद पद्धति पर हुई है। इसमें जायसी ने फारसी की मसनवी शैली को अपनाया है? जिसमें कथा सर्गों में बँटी होकर बराबर चलती रहती है। केवल स्थान-स्थान पर घटनाओं या प्रसंगों का उल्लेख शीर्षक के रूप में होता है, लेकिन काव्य का रूप विदेशी होते हुए भी उसकी आत्मा विशुद्ध भारतीय है।

इनकी मृत्यु सन् 1542 में हुई मानी जाती है।

केन्द्रीय भाव

परमसत्ता के प्रति समर्पण भाव का नाम भक्ति है। यही समर्पण भाव प्राणीमात्र में विस्तार पाता है। इसीलिए संत-हृदय को नवनीत से भी अधिक द्रवणशील माना गया है। भक्ति में व्यक्ति का अहंकार तिरोहित हो जाता है। भक्ति के अंतर्गत ईश्वर की अर्चना और वन्दना का प्रावधान है। भक्तिकाल में ईश्वर के सगुण और निर्गुण दोनों रूपों की आराधना का विधान किया गया है। सगुण भक्ति को मानवीय आचरण के उदात्तभावों का समुच्चय माना गया है। ईश्वर के लोकरक्षक और लोकरंजक स्वरूप को इस धारा के अंतर्गत प्रतिष्ठित किया गया है। कवियों ने इसी भाव-भूमि पर राम और कृष्ण के लोकरंजक कार्यों का वर्णन किया है। निर्गुण भक्ति में ज्ञान और प्रेम के माध्यम से सामाजिक सुधार के अनेक पक्षों की अभिव्यक्ति हुई है।

निर्गुण काव्यधारा के कवियों ने सामाजिक समरसता की प्रतिष्ठा की है। जहाँ सगुण काव्य के अंतर्गत तुलसीदास और सूरदास जैसे कवियों ने मानवीय जीवन के अनेक श्रेष्ठ और उदात्त पक्षों को राम और कृष्ण के चरित्रों के माध्यम से प्रकट किया है, वहीं निर्गुण भक्ति के अंतर्गत कबीर और जायसी ने सामाजिक चेतना के जागरण हेतु विवेक और प्रेम को आधार बनाया है। 'रामचरित मानस' और 'पद्मावत' जैसे महाकाव्य इस युग में ही रचे गए हैं। गीतों और पदों के माध्यम से भी इस युग की कविता को समृद्ध किया गया है। आचरण की पवित्रता और ईश्वर की आराधना को भक्त कवियों ने सर्वाधिक महत्व प्रदान किया है। इस युग के अधिकांश कवि पहले भक्त हैं फिर कवि हैं। इनका काव्य लोककल्याण की भावना से ओतप्रोत है।

सूरदास ने अपने काव्य के द्वारा कृष्ण की लीलाओं को जन-जन तक पहुँचाया है। वे सख्य भाव से कृष्ण की आराधना करने वाले भक्त कवि हैं। उन्होंने इस तथ्य को स्वीकार किया है कि सगुण ईश्वर हमारे लिए अधिक अनुकूल हैं क्योंकि उसके आचरण हमारे लिए आदर्श बनते हैं। उनके विनय के पदों में ईश्वर की कृपा और भक्त की न्यूनताओं का वर्णन किया गया है। वे भक्त के रूप में अपने अवगुणों का बखान करते हैं और अपने आराध्य के समदर्शी स्वरूप की भी सराहना करते हैं।

'जायसी' निर्गुणधारा के प्रेममार्गी कवि हैं। अपने ग्रंथ 'पद्मावत' में उन्होंने प्रेम के महत्व को प्रतिपादित किया है। वे सृष्टि रचना के मूल में ईश्वरीय शक्ति का स्मरण श्रद्धा-भाव के साथ करते हैं। इस तरह से उनके द्वारा रचित 'स्तुति खंड' में ईश्वरीय शक्ति के प्रति कृतज्ञता भाव के साथ-साथ सृष्टि की विभिन्नताओं में ईश्वरीय चेतना की एकसूत्रता का समाहित होना, सृष्टि की समरसता की ओर भी संकेत करता है।

विनय के पद

अविगत-गति कछु कहत न आवै।
ज्यों गूँगे मीठे फल कौ रस, अंतरगत ही भावै।
परम स्वाद सबही सुनिरंतर, अमित तोष उपजावै।
मन-बानी कौ अगम अगोचर, सो जानै जो पावै।
रूप-रेख-गुन-जात-जुगति-बिनु, निरालंब कित धावै।
सब विधि अगम बिचारहि तातैं, सूर सगुन पद गावै ॥ 1॥

हमारे प्रभु औगुन चित न धरौ।
समदरसी है नाम तुम्हारौ, सोई पार करौ।
इक लोहा पूजा मैं राखत, इक घर बधिक परौ।
सो दुविधा पारस नहि जानत, कंचन करत खरौ।
इक नदिया, इक नार कहावत, मैलौ नीर भरौ।
जब दोऊ मिलि एक बरन भए, सुरसरि नाम परौ।
तन माया ज्यों ब्रह्म कहावत, सूर सुमिलि बिगरौ।
कै इनको निरधार कीजिए, कै प्रन जात टरौ ॥ 2 ॥

मो सम कौन कुटिल खल कामी।
तुम सौं कहा छिपी करुनामय, सबके अंतरजामी।
जो तन दियौ ताहि बिसरायौ, ऐसौ नोन-हरामी।
भरि-भरि द्रोह बिषै कौं धावत, जैसे सूकर ग्रामी ।
सुनि सतसंग होत जिय आलस, बिषयिनि संग बिसरामी।
श्री हरि-चरन छाँड़ि बिमुखनि की, निसि-दिन करत गुलामी।
पापी परम, अधम अपराधी, सब पतितनि मैं नामी।
सूरदास प्रभु अधम-उधारन, सुनियै श्रीपति स्वामी ॥ 3 ॥

जापर दीनानाथ ढरैं।
सोइ कुलीन, बड़ौ सुन्दर सोई, जिहि पर कृपा करैं।
कौन विभीषन रंक-निसाचर, हरि हँसि छत्र धरै।
राजा कौन बड़ो रावन तैं, गर्बहि-गर्ब गरै।
रंकव कौन सुदामा हूँ तै, आप समान करै।
अधम कौन है अजामील तैं, जम तंह जात डरै।
कौन विरक्त अधिक नारद तैं, निसि दिन भ्रमत फिरै।
जोगी कौन बड़ौ संकर तैं, ताको काम छरै।
अधिक कुरूप कौन कुबिजा तैं, हरिपति पाइ तरै।
अधिक सुरूप कौन सीता तैं, जनम बियोग भरै।
यह गति-गति जानै नहि कोऊ, किहिं रस रसिक ढरै।
सूरदास भगवंत-भजन बिनु, फिरि-फिरि जठर जरै ॥ 4 ॥

- सूरदास

स्तुति खण्ड

सँवरौ आदि एक करतारू। जेहँ जिउ दीन्ह कीन्ह संसारू॥
कीन्हेसि प्रथम जोति परगासू। कीन्हेसि तेहिं पिरीति कवितासू॥
कीन्हेसि अगिनि पवन जल खेहा। कीन्हेसि बहुतइ रंग उरेहा॥
कीन्हेसि धरती सरग पतारु। कीन्हेसि बरन-बरन अवतारू॥
कीन्हेसि सात दीप ब्रह्मंडा। कीन्हेसि भुवन चौदहउ खंडा॥
कीन्हेसि दिन दिनअर ससि राती। कीन्हेसि नखत तराइन पाँती॥
कीन्हेसि धूप सीउ और छाहाँ। कीन्हेसि मेघ बिजु तेहि माहाँ॥

कीन्ह सबइ अस जाकर दोसरहि छाज न काहु।
पहिलेहिं तेहिक नाउँ लइ कथा कहौं अवगाहु ॥ 1॥

कीन्हेसि हेवँ समुंद्र अपारा। कीन्हेसि मेरु खिखिंद पहारा।।
कीन्हेसि नदी नार औ झारा। कीन्हेसि मगर मच्छ बहु बरना॥
कीन्हेसि सीप मोंति बहु भरे। कीन्हेसि बहुतइ नग निरमरे॥
कीन्हेसि वनखंड औ जरि मूरी। कीन्हेसि तरिवर तार खजूरी॥
कीन्हेसि साउज आरन रहहीं । कीन्हेसि पंखि उड़हि जहँ चहहीं॥
कीन्हेसि बरन खेत औ स्यामा। कीन्हेसि भूख नींद विसरामा॥
कीन्हेसि पान फूल बहु भोगू। कीन्हेसि बहु ओषद बहु रोगू॥

निमिख न लाग कर ओहि सबइ कीन्ह पल एक।
गगन अंतरिख राखा बाज खंभ बिनु टेक ॥ 2॥

कीन्हेसि मानुस दिहिस बड़ाई। कीन्हेसि अन्न भुगुति तेंहि पाई।।
कीन्हेसि राजा भूँजहि राजू। कीन्हेसि हस्ति घोर तिन्ह साजू ॥
कीन्हेसि तिन्ह कहँ बहुत बेरासू। कीन्हेसि कोइ ठाकुर कोइ दासू॥
कीन्हेसि दरब गरब जेंहि होई। कीन्हेसि लोभ अघाइ न कोई॥
कीन्हेसि जिअन सदा सब चाहा। कीन्हेसि मीचु न कोई रहा॥
कीन्हेसि सुख औ कोउ अनंदू । कीन्हेसि दुख चिंता औ दंदू॥
कीन्हेसि कोई भिखारि कोई धनी। कीन्हेसि संपति विपति पुनि घनी॥

कीन्हेसि कोई निभरोसी कीन्हेसि कोई बरिआर।
छार हुते सब कीन्हेसि, पुनि कीन्हेसि सब छार ॥3॥

– मलिक मुहम्मद जायसी

अभ्यास

बोध प्रश्न

अति लघु उत्तरीय -

1. पद में मीठे फल का आनंद लेने वाला कौन है ?
2. अवगुणों पर ध्यान न देने के लिए सूरदास ने किससे प्रार्थना की है ?
3. पारस में कौन-सा गुण पाया जाता है ?
4. जायसी के अनुसार संसार की सृष्टि किसने की है ?
5. ईश्वर ने रोगों को दूर करने के लिए मनुष्य को क्या दिया ?
6. 'स्तुति खंड' में जायसी ने कितने द्वीपों और भुवनों की चर्चा की है ?
7. जायसी ने किसका स्मरण करते हुए कथा लिखी है ?

लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. सूरदास ने निर्गुण की अपेक्षा सगुण को श्रेयस्कर क्यों माना है ?
2. गूँगा, फल के स्वाद का अनुभव किस तरह करता है ?
3. कुब्जा कौन थी ? उसका उद्धार कैसे हुआ ?
4. सूरदास ने स्वयं को 'कुटिल खल कामी' क्यों कहा है ?
5. जायसी के अनुसार परमात्मा ने किस-किस तरह के मनुष्य बनाए हैं ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न -

1. सूरदास ने किस आधार पर ईश्वर को समदर्शी कहा है ?
2. निर्गुण और सगुण भक्ति में क्या अंतर है ?
3. ईश्वर ने प्रकृति का निर्माण कितने रूपों में किया है ? वर्णन कीजिए ।
4. निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए -
   (अ) अविगत गति ..... जो पावै।
   (ब) अधिक कुरूप कौन ..... फिरि-फिरि जठर जरै।
   (स) कीन्हेसि मानुस दिहिसि ..... अघाइ न कोई।

ध्यान दीजिए -

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, अस्तु वह अपने मन के भावों और विचारों को प्रकट करना चाहता है और दूसरे के भावों और विचारों से अवगत होना चाहता है। वाणी या शब्द के माध्यम से ही वह भावों और विचारों का आदान-प्रदान करता है। यही वाणी वार्ता, शास्त्र, काव्य या साहित्य के माध्यम से व्यक्त होती है।

जिसमें ज्ञान-विज्ञान की प्रधानता हो उसे शास्त्र कहते हैं और जिसमें भाव या प्रभाव की प्रधानता हो उसे काव्य या साहित्य कहा जाता है। दूसरे शब्दों में समस्त भाव प्रधान साहित्य को काव्य कहते हैं। विद्वानों ने काव्य के विभिन्न लक्षण बताए हैं।

आचार्य विश्वनाथ के अनुसार 'रसयुक्त वाक्य ही काव्य है।' (वाक्यं रसात्मकं काव्यम्) पंडितराज जगन्नाथ 'रमणीय अर्थ के प्रतिपादक धर्म को काव्य कहते हैं।' (रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम्)। आचार्य रामचंद्र

शुक्ल के अनुसार 'जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञानदशा कहलाती है उसी प्रकार हृदय की मुक्तावस्था रसदशा कहलाती है। हृदय की इसी मुक्ति की साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द विधान करती आई है, उसे कविता कहते हैं। जयशंकर प्रसाद ने काव्य को 'आत्मा की संकल्पनात्मक अनुभूति कहा है।'

सभी विद्वानों के निष्कर्षानुसार भाषा के माध्यम से सौंदर्यानुभूति की अभिव्यक्ति काव्य है।

काव्य के भेद –

काव्य के बाह्य रूप के आधार पर दो भेद किए जाते हैं – 1. पद्यकाव्य 2. गद्यकाव्य

पद्यकाव्य में छंद अथवा नियमित लय का प्रयोग किसी न किसी रूप में अनिवार्य रूप से किया जाता है, किन्तु गद्य-काव्य में उसका प्रयोग नहीं किया जाता।

पद्यकाव्य –

पद्यकाव्य के प्रमुख दो भेद है – 1. मुक्तक काव्य 2. प्रबंध काव्य

1. **मुक्तक काव्य** – मुक्तक काव्य में प्रत्येक छंद अपने आप में स्वतंत्र और पूर्ण रहता है। इसमें पूर्वापर संबंध नहीं रहता अत: छंदों या गीत का क्रम बदल देने पर भाव स्पष्ट करने में असुविधा नहीं होती। सामान्यत: इसके अन्तर्गत गीत, कविता, दोहा, पद, आदि आते हैं। सूर, मीरा, बिहारी, रहीम जैसे कवियों के गेय पद मुक्तक काव्य के उदाहरण हैं।

2. **प्रबंध काव्य** – प्रबंध काव्य में अनेक छंद किसी एक कथासूत्र में पिरोए हुए रहते हैं। छंदो के क्रम को बदला नहीं जा सकता। प्रबंध काव्य विस्तृत होता है, उसमें जीवन की विभिन्न झाँकियाँ रहती हैं। इसमें किसी व्यक्ति के जीवन-चरित्र का वर्णन होता है।

प्रबंध काव्य के दो उपभेद होते है – 1. महाकाव्य 2. खंडकाव्य

महाकाव्य –

महाकाव्य में जीवन का अथवा घटना विशेष का सांगोपांग चित्रण होता है। वृहद् काव्य होने के कारण ही इसे महाकाव्य कहा जाता है। महाकाव्य के प्रमुख लक्षण हैं –

1. महाकाव्य में आठ या उससे अधिक सर्ग होते हैं।
2. महाकाव्य का नायक धीरोदात्त गुणों से युक्त होता हैं।
3. इसमें शांत, वीर अथवा श्रृंगार रस में से किसी एक की प्रधानता होती है।
4. महाकाव्य में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति होती है।
5. इसमें अनेक छंदों का प्रयोग होता है।

प्रमुख महाकाव्य हैं – पृथ्वीराज रासो, पद्मावत, रामचरित मानस, साकेत, कामायनी आदि।

(रामचरित मानस में सात सर्ग होने पर भी इसे महाकाव्य के अन्तर्गत रखा गया है।)

खंडकाव्य –

खंडकाव्य में नायक के जीवन की किसी एक घटना अथवा हृदयस्पर्शी अंश का पूर्णता के साथ अंकन किया जाता है। खंडकाव्य के प्रमुख लक्षण हैं –

1. खंडकाव्य में मानव के किसी एक पक्ष का चित्रण होता है।
2. इसमें एक ही छंद का प्रयोग होता है।
3. कथावस्तु पौराणिक या ऐतिहासिक विषयों पर आधारित होती है।
4. श्रृंगार व करुण रस प्रधान होता है।
5. इसका उद्देश्य महान होता है।

प्रमुख खंडकाव्य हैं – पंचवटी, जयद्रध वध, सुदामाचरित, तुलसीदास, हल्दीघाटी का युद्ध आदि।

योग्यता-विस्तार

1. सूरदासजी के अन्य पद खोजकर पढ़िए।
2. भक्तिकाल के सगुण और निर्गुण धारा के कवियों की सूची बनाइए।
3. भक्तिकालीन कवियों के चित्र एकत्रित कर उन्हें कालक्रमानुसार चिपकाकर एक एलबम तैयार कीजिए।

शब्दार्थ

अविगत = जिसे जाना न जा सके। **अगोचर**=जो दिखाई न दे। **अन्तरगत** = हृदय। **अमित** = अधिक। **तोष** = संतोष। **निरालम्ब** = बिना सहारे। **बधिक** = बध करने वाला। **सुरसरि** = गंगा। **पारस** = एक विशेष पत्थर जो लोहे को सोना कर देता है। **कंचन** = सोना, स्वर्ण। **कुटिल** = टेढ़े स्वाभाव का। **खल** = दुष्ट। **अधम** = नीच। **श्रीपति** = विष्णु। **रंक** = गरीब।

सबरौ = स्मरण करता हूँ। **करतारू** = ईश्वर। **खेहा** = मिट्टी। **उरेहा** = चित्र बनाना। **दिनअर** = सूर्य। **तराइन** = तारागण। **सीउ** = शीत। **माझा** = मध्य, बीच में। **अस** = इस प्रकार। **दोसरई** = दूसरा। **छाज** = सुशोभित होना। **अवगाहूँ** = अवगाहन करना, डूबना। **खिखिंद** = किष्किंधा। **निरमरे** = निर्मल। **जरि मूरी** = जड़ और मूल। **साउज** = जानवर। **आरन** = अरण्य जंगल। **औषद्** = औषधि। **निमिख** = क्षण। **अंतरिव**=अंतरिक्ष। **बाज**=बिना। **दिहिस** = दी। **भुगति** = भोजन। **भूजँहि** = उपभोग करते है। **घोर** = घोड़ा। **बेरासू** = विलास। **जिअन** = जीवन। **मीचु** = मृत्यु। **द्वंदू** = द्वन्द्व। **बरियार** = शक्तिशाली।

वात्सल्य-भाव

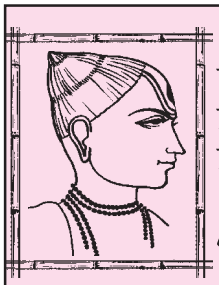

कवि परिचय – युगद्रष्टा गोस्वामी तुलसीदास जी भक्तिकाल के प्रतिनिधि कवि हैं। भारतीय संस्कृति और सामाजिक मूल्यबोध के चितेरे तुलसी का जन्म मध्ययुग की विषम परिस्थितियों में माता हुलसी और पिता आत्माराम दुबे के घर, उत्तरप्रदेश के राजापुर ग्राम में श्रावण शुक्ला सप्तमी संवत् 1589 को हुआ। अशुभ मूल-नक्षत्र में जन्म लेने के कारण वे माता-पिता के द्वारा परित्यक्त हुए।

'रामचरित मानस', 'कवितावली', 'दोहावली', 'गीतावली', 'विनयपत्रिका', 'जानकीमंगल', 'पार्वती-मंगल', 'रामलला-नहछू' उनके प्रमुख प्रामाणिक ग्रंथ हैं।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार तुलसीदास जी 'जीवनगाथा' के कवि हैं, मनुष्य के सम्पूर्ण भावों एवं व्यवहारों पर उनकी मजबूत पकड़ है। तुलसीदास जी ने रामचरित मानस के द्वारा श्रीराम के लोकरंजक एवं लोकमंगल स्वरूप को प्रतिष्ठित किया है। राम-राज्य के माध्यम से आदर्श राज्य की स्थापना उनके काव्य का प्रमुख उद्देश्य है, जो आज भी प्रांसगिक है। इस महाकाव्य में समाज के प्रत्येक 'संबंध' के मर्यादित आदर्श स्वरूप के दर्शन सहज ही हो जाते हैं। इसी कारण तुलसीदास जी जन-जन के मन में बसे हैं।

'रामचरित मानस' की रचना करके युगकवि ने जहाँ तत्कालीन विषम परिस्थितियों में शैव एवं वैष्णवों के मतभेदों को समाप्त करके उन्हें एकता के सूत्र में बाँधा, वहीं लोक-मानस में कर्तव्यबोध की अभिप्रेरणा ने नवीन दृष्टि उत्पन्न की। रामचरित मानस युग-युगान्तर तक समाज को नवजीवन प्रदान करने में सक्षम है।

तुलसीदासजी सच्चे अर्थों में करुणा के कवि हैं।

हरिनारायण व्यास

कवि परिचय – हरिनारायण व्यास का जन्म मध्यमवर्गीय परिवार में 14 अक्टूबर सन् 1923 को ग्राम सुंदरसी जिला शाजापुर में हुआ। अभावों के मध्य उन्होंने उज्जैन और बड़ौदा में शिक्षा प्राप्त की। बाल्यावस्था से ही काव्य रचना में रुचि होने के कारण मामा गोपीवल्लभ उपाध्याय के बौद्धिक प्रभाव और प्रेरणा से वे आगे बढ़े। मुक्तिबोध, प्रभाकर माचवे और गिरिजाकुमार माथुर के सम्पर्क से आपकी काव्य रचना और अधिक पुष्ट हुई।

हरिनारायण व्यास की काव्य यात्रा सन् 1951 में अज्ञेय जी के 'दूसरा सप्तक' में सम्मिलित होने से विधिवत् आरम्भ हुई, 'मृग और तृष्णा' काव्य संकलन में उनके काव्य जीवन का प्रतिबिम्ब है। सामाजिक विकास और वातावरण उनके बाहरी संघर्ष और आत्म विकास को प्रेरणा देता है, यही उनकी कविता को नया स्वरूप प्रदान करता है।

कवि की प्रमुख मान्यताएँ कविता को जीवन और प्रतीक से जोड़कर स्वरूप लेती हैं। आपके मतानुसार जीवन और समाज का एक प्रबल अस्त्र है – 'भाषा'; जो जीवन से अलग न होकर उसी में जीती है। व्यास जी कवि को सपनों का संसार कहते हैं; किंतु अपने आसपास के खुरदरे यथार्थ और जीवंत परिवेश से जुड़कर ही आपकी कविता का विकास रचनात्मक आयाम लेता है।

हरिनारायण व्यास की प्रमुख रचनाएँ हैं – 'मृग और तृष्णा', 'त्रिकोण पर सूर्योदय', 'बरगद के चिकने पत्ते', 'आउटर पर रुकी ट्रेन' आदि।

केन्द्रीय भाव

पृथ्वी और मनुष्य का संबंध माँ और पुत्र का है। वैदिक ऋषि ने इसका उद्घोष करते हुए स्पष्ट किया है- ''माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः'' मनुष्य निरंतर पृथ्वी से पोषित होता है। पृथ्वी ने अपनी संतान मनुष्य के लिए अपना सब कुछ समर्पित कर दिया है। पृथ्वी अब भी अपनी संतान, मनुष्य के प्रति वात्सल्य से परिपूर्ण है। माता-पिता और उनकी संतान के बीच जो शाश्वत प्रेमभाव क्रियाशील रहता है, वही वात्सल्य भाव कहा जाता है। वात्सल्य के अंतर्गत यद्यपि मातृभाव और संतान भाव का पारस्परिक आकर्षण हैं, किंतु संतान पक्ष का इसमें विशेष महत्व इस रूप में है कि वही वात्सल्य भाव का उत्प्रेरक होता है। शिशु का बाल सुलभ सौन्दर्य, वात्सल्य का आधार होता है। शिशु के अंग-प्रत्यंग की सुषमा, उसकी क्रीड़ाएँ, उसके हाव-भाव और उसकी बोली-बानी सब कुछ वात्सल्य भाव को जागृत करते हैं। काव्य में वात्सल्य को माता-पिता के शिशु संबंधी प्रेम के रूप में व्यक्त किया गया है।

शिशु के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर प्रकट होने वाला निश्छल प्रेम ही वात्सल्य का आधार है। काव्य के अंतर्गत संतान के प्रति जो माता-पिता का भाव होता है वही वात्सल्य रस में परिणत हो जाता है। हिन्दी काव्य में वात्सल्य केन्द्रित कविताओं की यद्यपि प्रचुरता नहीं है, किन्तु तुलसीदास, सूरदास और रसखान जैसे कवियों ने राम और कृष्ण की बाल-लीलाओं का विस्तार से वर्णन किया है। वात्सल्य के सघन और प्रभावशाली वर्णन में सूरदास हिन्दी के सिद्धहस्त कवि हैं।

आधुनिक कवियों ने वात्सल्य केन्द्रित कविताओं की रचना अपने युग के भाव-बोध के अनुरूप प्रस्तुत की है। वात्सल्य की आधार भाव-भूमियों की अपरिवर्तित स्थितियों के मध्य सम-सामयिक परिवेश में वात्सल्य की अनुभूतियों के प्रस्तुतीकरण में नए भावबोध का प्रयोग आधुनिक कवियों के काव्य में हुआ है। सुभद्राकुमारी चौहान, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, केदारनाथ अग्रवाल तथा हरिनारायण व्यास आदि ने वात्सल्य भाव को अपनी कविताओं में समाहित किया है।

तुलसीदास ने यद्यपि अपने महाकाव्य 'रामचरित मानस' में राम की बाललीला का संक्षिप्त वर्णन किया है, किन्तु उन्होंने अपनी कृति 'कवितावली' में राम की बालछवि और उनकी बाल-लीलाओं का विशद विवेचन किया है। वात्सल्य के अंतर्गत शिशु स्वरूप के सौंदर्य की अपनी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इस संदर्भ में तुलसीदास ने शिशु राम की छवि का मनोहारी अंकन किया है।

प्रस्तुत कविता में शिशु राम के नेत्रों, मुख, देह-कांति, दंत-पंक्ति, आदि के मनोरम चित्रण के साथ ही उनकी बाल क्रीड़ाओं का अनुरंजनकारी दृश्यांकन किया है। तुलसीदास द्वारा प्रस्तुत बाल-वर्णन अनेक नवीन उपमाओं का आश्रय प्राप्त कर हृदयग्राही हो उठा है। शिशु के प्रति अनुरक्ति का प्रबल भाव तुलसीदास के इस काव्य में जाग्रत होता है।

हरिनारायण व्यास ने बच्चों की फूलों-सी पलकों, तितली की पांखों-सी उसकी आँखों, इंद्रधनुष-सी उसकी दृष्टि का अंकन करते हुए आज के संघर्षरत् व्यक्ति के वात्सल्य भाव को प्रस्तुत कविता में चित्रित किया है। इस कविता में शिशु की सुंदरता पर वह अपने संघर्षों की कठोर छाया नहीं डालना चाहता है। युगानुरूप प्रतीक बदलते रहते हैं - इसलिए नव बोध प्रदान करने की सामर्थ्य बदलते प्रतीकों के माध्यम से ही प्राप्त की जा सकती है - वात्सल्य का यह रूप युग के अनुकूल है।

सोए हुए बच्चे से कविता में यथार्थवादी दृष्टिकोण और रेशमी बाल कल्पना के बीच द्वन्द्व उभरा है।

कवितावली

अवधेस के द्वारें सकारें गई सुत गोद कै भूपति लै निकसे ।
अवलोकि हौं सोच बिमोचन को ठगि-सी रही, जे न ठगे धिक-से॥
तुलसी मन-रंजन रंजित-अंजन, नैन सुखंजन-जातक से।
सजनी ससि में समसील उभै नवनील सरोरुह-से बिकसे ॥ 1॥

पग नुपूर औ पहुँची करकंजनि मंजु बनी मनिमाल दिएँ ।
नवनील कलेवर पीत झँगा झलकै पुलकैं नृपु गोद लिएँ॥
अरबिंदु सो आननु रूप मरंदु अनंदित लोचन भृंग पिएँ ।
मनमोंन बस्यौ अस बालकु जौं तुलसी जग में फलु कौन जिएँ ॥ 2॥

तनकी दुति स्याम सरोरुह लोचन कंज की मंजुलताई हरैं ।
अति सुंदर सोहत धूरिभरे छवि भूरि अनंगकी दूरि धरैं॥
दमकैं दतियाँ दुति दामिनि ज्यौं किलकैं कल बालविनोद करैं।
अवधेसके बालक चारि सदा तुलसी-मन-मंदिर में बिहरैं॥ 3॥

कबहूँ ससि माँगत आरि करैं कबहूँ प्रतिबिंब निहारि डरैं।
कबहूँ करताल बजाइकै नाचत मातु सबै मन मोद भरैं॥
कबहूँ रिसिआइ कहैं हठिकैं पुनि लेत सोई जेहि लागि अरैं।
अवधेसके बालक चारि सदा तुलसी-मन-मंदिर में बिहरैं ॥4॥

वर दंतकी पंगति कुंदकली अधराधर-पल्लव खोलन की।
चपला चमकैं घन बीच जगै छवि मोतिन माल अमोलन की॥
घुँघरारि लटैं लटकैं मुख ऊपर कुंडल लोल कपोलन की ।
नेवछावरि प्रान करै तुलसी बलि जाउँ लला इन बोलन की ॥ 5॥

- तुलसीदास

सोए हुए बच्चे से

मेरे ख्याल इतने खबसूरत नहीं हैं
जिनको मैं फूलों-सी खूबसूरत तुम्हारी पलकों को
छुआ दूँ और ये तुम्हारे लिए
खूबसूरत सपने बन जाएँ।

ये ख्याल इन दुनियादारी की
लपटों से झुलस गए हैं
पहाड़ों से टकराती नाव हैं,
नाकामयाबी की चोट से
ये लहूलुहान हैं।

तितली की पाँखों-सी
तुम्हारी आँखों में उगते हुए उजाले के
इन्द्रधनुष सपने
इनमें फँसकर बिखर जाएँगे।

बिवाईं वाली इन पथरीली हथेलियों से
तुम्हारे रेशमी बालों की
शैशवी लापरवाही को स्पर्श नहीं करूँगा।

फटी हुई चमड़ी में उलझकर
कोई बाल कोई रंगीन मनसूबा कोई
कामयाब भविष्य
टूट जाएगा
आने वाला जमाना,
मुझे दोषी ठहराएगा।

तुम्हारी पलकों में तैरती
उनींदी पुतलियों पर

सेमल की रूई-सी
सुबह की नींद
जागने से पहले की खुमारी
मँडरा रही है
और तुम्हारा मन
आतुर है कुलाँचें भरने।

हम तुम ही से तो अपनी अहमियत
पहचानते हैं
तुम हो इसीलिए तो हमारी भूख-प्यास
मकसद रखती है।

मैं तुम्हारे गालों को
बीमार ओठों की छुअन से नहीं जलाऊँगा

तुम इसी तरह मुस्कुराते सोये रहो
सूरज खुद तुमको जगाएगा।

- हरिनारायण व्यास

अभ्यास

बोध प्रश्न

अति लघु उत्तरीय -

1. सखी प्रात:काल किसके द्वार पर जाती है ?
2. बालक राम किस वस्तु को माँगने का हठ करते हैं ?
3. बच्चे की आँखों की तुलना किससे की गई है ?
4. तुलसीदास जी के मन मंदिर में सदैव कौन विहार करता रहता है ?
5. ईश्वर ने रोगों को दूर करने के लिए मनुष्य को क्या दिया ?

लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. सखी ठगी सी क्यों रह गई ?
2. माताएँ बालक राम की कौन-सी चेष्टाओं से प्रसन्न होती हैं ?
3. बालक राम का मुख-सौंदर्य कैसा है ?
4. बच्चे के रेशमी बालों को कवि अपनी हथेलियों से क्यों स्पर्श करना नहीं चाहता?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

1. तुलसीदास ने बालक राम के किस स्वभाव का चित्रण किया है ?
2. 'तुलसी ने बालहठ' का स्वाभाविक चित्रण किया है। इस उक्ति को पाठ के आधार पर सिद्ध कीजिए।
3. हरिनारायण व्यास ने अपने 'ख्यालों' की किन कमियों की ओर संकेत किया है ?
4. निम्नांकित पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए -

(अ) 'पग नूपुर औ पहुँची कर कंजनि .....
..... तुलसी जग में फलु कौन जिएँ।'

अथवा

'कबहूँ ससि माँगत आरि करैं .....
..... तुलसी-मन-मंदिर में बिहरैं।'

(ब) ये ख्याल इस दुनियादारी की /लपटों से झुलस गए हैं
पहाड़ों से टकराती नाव हैं / नाकामयाबी की चोट से / ये लहूलुहान हैं।

अथवा

फटी हुई चमड़ी में उलझकर /कोई बाल, कोई रंगीन मनसूबा,कोई कामयाब भविष्य/
टूट जाएगा / आनेवाला जमाना / मुझे दोषी ठहराएगा।

ध्यान दीजिए -

किसी काव्य या साहित्य को पढ़ने, सुनने या देखने से पाठक श्रोता या दर्शक को जिस आनंद की अनुभूति होती है उसे रस कहते हैं। भरतमुनि के अनुसार ''विभावानुभाव व्यभिचारि संयोगाद्रस निष्पति:'' जब स्थायी भाव का संयोग विभाव, अनुभाव तथा व्यभिचारी भावों से होता है तब रस की निष्पत्ति होती है। रस के चार अंग होते हैं- स्थाई भाव, विभाव, अनुभाव और संचारी भाव।

राम को रूप निहारति जानकी कंकन के नग की परछाहीं।
यातैं सबै सुधि भूलि गई कर टेकि रही पल टारत नाहीं॥

उपयुक्त उदाहरण में आलंबन – राम, आश्रय–सीता, संचारी भाव – सुधि भूलना, स्थाई भाव – रति है।

1. **स्थायी भाव** –

सहृदय के हृदय में जो भाव स्थायी रूप से विद्यमान रहते हैं उन्हें स्थायी भाव कहते हैं। प्रत्येक रस का एक स्थायी भाव होता है। इनकी संख्या दस है।

	रस		स्थायी भाव
1.	शृंगार रस	–	रति
2.	शांत रस	–	निर्वेद
3.	करुण रस	–	करुणा, शोक
4.	हास्य रस	–	हास
5.	वीर रस	–	उत्साह
6.	रौद्र रस	–	क्रोध
7.	भयानक रस	–	भय
8.	वीभत्स रस	–	जुगुप्सा या घृणा
9.	अद्‌भुत रस	–	विस्मय
10.	वात्सल्य रस	–	वत्सल

2. **विभाव** – स्थायी भावों के उत्पन्न होने के कारणों को विभाव कहते हैं। इसके दो भेद हैं–आलंबन और उद्दीपन।

आलंबन – जिसके प्रति स्थायी भाव उत्पन्न हो, वह आलंबन कहलाता है। आलम्बन के दो अंग हैं–आश्रय और विषय

आश्रय – जिस व्यक्ति के मन में भाव जाग्रत हों और **विषय**–जिसको देखकर मन में भाव जाग्रत हों।

उद्दीपन – भावों को बढ़ाने या उद्दीप्त करने वाले पदार्थ उद्दीपन कहलाते हैं ।

3. **अनुभाव** – आश्रय की बाह्य शारीरिक चेष्टाओं को अनुभाव कहते हैं।

4. **संचारीभाव** – आश्रय के चित्त में उत्पन्न होने वाले अस्थिर मनोविकारों को संचारी भाव कहते हैं। इसे व्यभिचारी भाव भी कहा जाता है। निर्वेद, ग्लानि, मद, स्मृति, शंका, आलस्य, चिंता, दीनता, मोह आदि संचारी भाव हैं, इनकी कुल संख्या 33 मानी गई है।

प्रश्न– रस की परिभाषा देते हुए रस के अंगों को उदाहरण सहित समझाइए ।

और भी समझिए -

जसोदा हरि पालनैं झुलावै ।
हलरावैं, दुलरावैं मल्हावैं, जोइ-सोइ कछु गावैं।
मेरे लाल कौं आउ निंदरिया, काहे न आनि सुवावै।

इन पंक्तियों में माता यशोदा के कृष्ण के प्रति वात्सल्य का चित्रण है। सहृदय के हृदय में स्थित वत्सल नामक स्थायी भाव का जब विभाव, अनुभाव और संचारी भाव से संयोग हो जाता है तब वहाँ वात्सल्य रस होता है।

स्थायी भाव	–	वत्सल
आश्रय	–	यशोदा
आलंबन	–	बालकृष्ण
उद्दीपन	–	कृष्ण की नींद को बुलाना उनका पलकें मूँदना
अनुभाव	–	यशोदा की क्रियाएँ
संचारी भाव	–	शंका, हर्ष

प्रश्न – वात्सल्य रस को परिभाषित करते हुए एक उदाहरण दीजिए ।

योग्यता-विस्तार

1. तुलसीदास के रामचरित मानस के बालकांड से अन्य पद खोजकर पढ़िए।
2. अन्य कवियों के वात्सल्य रस की रचनाएँ संकलित कीजिए और हस्तलिखित पुस्तिका तैयार करिए।
3. अपने परिवेश में बोले जाने वाले कुछ देशज शब्दों की सूची बनाइए ।

शब्दार्थ

अवधेस = (अयोध्या के राजा) राजा दशरथ। **सकारे** = सबेरे। **निकसे** = निकले। **अवलोकिहों** = देख करके। **सोच-विमोचन** = चिंता दूर होना। **धिक्से** = धिक्कार। **मनरंजन** = मन को प्रसन्न करने वाले। **रंजित-अंजन** = काजल लगाए हुए। **जातक** = शिशु। **सजनी** = सखी। **ससि** = चन्द्रमा। **समसील** = एक जैसे आचरण वाले। **सरोरुह** = कमल। **विकसे** = खिले। **पहुँची** = कलाई में पहनने वाला गहना। **कर-कंजनि** = कमल रुपी हाथ। **मंजु**=सुंदर। **मनिमाल** = मणियों की माला। **हिए** = हृदय। **कलेवर** = शरीर। **अरविंदु** = कमल। **आननु** = मुख। **मरंदु** = पराग। **लोचन**=नेत्र। **भृंग** = भँवरा। **दुति** = आभा। **कंज** = कमल। **मंजुलताई** = शोभा। **हरैं** = हरण करते हैं। **अनंग** = कामदेव। **दामिनि** = बिजली। **बिहरै** = विहार करें। **आरि** = हठ। **निहारि** = देखकर। **करताल** = ताली। **मोद** = प्रसन्नता। **रिसिआई** = क्रोधित होकर। **अरै** = हठ करें। **वर** = श्रेष्ठ। **पंगति** = पंक्ति। **अधराधर** = दोनों अधर (ओष्ठ)। **पल्लव** = पत्ते। **चपला** = बिजली। **घन** = बादल। **लोल** = सुंदर। **कपोलन** = गालों पर

ख्याल = विचार। **मनसूबा** = इरादा। **कामयाब** = सफल। **दुनियादारी** = सांसारिकता। **लहूलुहान** = खून से लथपथ। **बिवाई** = फटा हुआ। एड़ी का फटना।

प्रेम और सौन्दर्य

कवि परिचय – हिन्दी की रीतिकालीन रीतिसिद्ध भावधारा के कवि बिहारी का जन्म सन् 1595 ई. (सम्वत् 1652) में ग्वालियर में हुआ था। आपके जन्म के सात-आठ वर्षों बाद आपके पिता केशवराय ग्वालियर छोड़कर ओरछा चले गए। ओरछा में ही आपने सुप्रसिद्ध कवि केशवदास से काव्य शिक्षा ग्रहण की और वहीं पर काव्यग्रन्थों, संस्कृत और प्राकृत आदि का अध्ययन किया। उर्दू-फारसी के अध्ययन के लिए आप आगरा आए, यहीं आपकी भेंट प्रसिद्ध कवि अब्दुल रहीम खानखाना से हुई। आपकी काव्य प्रतिभा ने जयपुर नरेश महाराज जयसिंह तथा उनकी पटरानी अनन्त कुमारी जी को विशेष प्रभावित किया। आप जयपुर नरेश के राजकवि रहे।

आप सन् 1663 ई. (सम्वत् 1720) के आस-पास परलोक वासी हुए। आपकी एक मात्र रचना 'सतसैया' (सतसई) मिलती है जिसमें दोहे और सोरठे संग्रहीत हैं।

हिन्दी में समास-पद्धति की शक्ति का परिचय सबसे अधिक बिहारी ने दिया है। आपकी रचना में सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक और ज्योतिष की असाधारण बातें भी अप्रस्तुत रूप में आई हैं। आपकी विषय सामग्री का प्रधान अंग शृंगार है। प्रेम के संयोग पक्ष में नख-शिख वर्णन के साथ ऋतुवर्णन भी आपने किया है। निम्बार्क सम्प्रदाय में दीक्षित होने के कारण भक्ति विषयक उद्‌गार भी आपकी रचना में देखे जा सकते हैं। आपके दोहों में अनुप्रास, यमक, आदि कई अलंकार भरे पड़े हैं।

बिहारी की भाषा साहित्यिक ब्रज है। भाषा में पूर्वी प्रयोग के साथ बुंदेली का भी प्रभाव है। आपकी भाषा प्रौढ़ और प्रांजल है। वह मुहावरों के प्रयोग सांकेतिक शब्दावली और सुष्ठु पदावली से युक्त व्याकरण सम्मत है।

कवि परिचय – हिंदी के छायावाद युग के प्रवर्तकों में प्रमुख जयशंकर प्रसाद का जन्म वाराणसी (उ.प्र.) के प्रतिष्ठित 'सुंघनी साहू' नामक समृद्ध एवं विख्यात परिवार में सन् 1889 ई. (माघ शुक्ल दशमी सं. 1946 वि.) को देवी प्रसाद साहू के घर हुआ था। घर पर ही आपकी शिक्षा के लिए हिंदी, संस्कृत, उर्दू, फारसी के शिक्षक नियुक्त किए गए, आप 48 वर्ष की आयु में यक्ष्मा रोग से 15 नवम्बर सन् 1937 को दिवंगत हुए।

प्रसाद जी की काव्य यात्रा सन् 1909 से इंदु पत्रिका में प्रकाशित उनकी ब्रजभाषा और खड़ी बोली हिंदी की कविताओं से प्रारंभ हुई। 'चित्राधार' और 'कानन कुसुम' आपके प्रारंभिक स्वतंत्र काव्य संग्रह हैं। आपकी भावनामूलक आदर्श प्रेमाभिव्यंजना 'प्रेमपथिक' और 'करुणालय' गीत नाट्य में दृष्टव्य हैं। 'झरना', 'आँसू' और 'लहर' काव्य कृतियों के प्रेमानुभूति के श्रेष्ठ गीतों ने हिंदी को समृद्ध किया। 'कामायनी' महाकाव्य सृष्टि की आदि कथा के रूप में मानवता की रूपक कथा है।

प्रसाद जी ने लगभग बारह नाटक भी लिखे, जिनमें प्रमुख 'स्कंदगुप्त' 'चंद्रगुप्त' और 'ध्रुव स्वामिनी' हैं। वे एक युगप्रवर्तक कलाकार भी थे। उनके 'छाया', 'प्रतिध्वनि' 'आकाशदीप', 'आंधी' 'इंद्रजाल' कहानी संग्रह और 'कंकाल', 'तितली' और 'इरावती' (अपूर्ण) यथार्थवादी उपन्यास हैं।

केन्द्रीय भाव

प्रेम मानवीय जीवन का आधार है। मनुष्य के सामाजिक विस्तार में प्रेम की महत्वपूर्ण भूमिका है। प्रेम ही व्यष्टि को समष्टि से जोड़ता है। इस रूप में प्रेम वह आंतरिक भाव है, जिसके माध्यम से मनुष्य अपना विस्तार करके सृष्टि चेतना के साथ संवेदित होता है। प्रेम व्यक्ति का विस्तार है, प्रेम जीवन की शांति है, प्रेम मानवीय आचरण का प्रस्थान भाव है।

प्रेम की अनुभूतियाँ संबंधों की चेतना जाग्रत करती हैं। प्रेम के जो अनेक रूप हैं उनमें नारी पुरुष के पारस्परिक संबंधों का भी एक महत्वपूर्ण रूप है। इसे काव्य के क्षेत्र में शृंगार की संज्ञा दी गई है।

शृंगार के अंतर्गत रूप, चेष्टा, शील, भाव को सौन्दर्य का केन्द्र माना गया है।

प्रेम का प्रारंभ सौन्दर्य के सिंहद्वार से ही होता है। सौन्दर्य मात्र रूप-छटा में ही निहित नहीं रहता है, अपितु आचरण में भी निवास करता है और आचरण का सौन्दर्य ही सच्चा सौन्दर्य है। इसे ही शील सौंदर्य कहा गया है। शृंगार के अंतर्गत वियोग और मिलन की भाव दशाओं का वर्णन किया जाता है। यह माना गया है कि वियोग में प्रेम की सघनता बढ़ती है। संपूर्ण हिंदी काव्य प्रेम की अनुभूतियों से परिपूर्ण है।

रीतिकाल के कवियों ने प्रेम के अनेक पहलुओं का चित्रण किया है किन्तु इस काल में सौन्दर्य वर्णन की प्रधानता है। बिहारी, घनानंद, मतिराम आदि कवियों ने प्रेम और सौंदर्य का प्रभावशाली वर्णन किया है। सौन्दर्य वर्णन में बिहारी अन्यतम कवि हैं। वे नायिका के सौंदर्य वर्णन में सिद्धहस्त कवि माने जाते हैं। रूप-चेष्टा और शील सौन्दर्य का मनोहारी वर्णन उनके काव्य में प्राप्त होता है। प्रस्तुत दोहों में बिहारी द्वारा कृष्ण - राधिका के आकर्षक सौंदर्य का चित्रण किया गया है। पीतांबर ओढ़े कृष्ण का नीलवर्णी रूप और झीने वस्त्र धारण किए राधिका का गौरवर्णी स्वरूप सुंदर उत्प्रेक्षाओं के माध्यम से प्रकट किया गया है। सौंदर्य दर्शन की न मिटने वाली प्यास के अतिरिक्त प्रेम की अगाध अनुभूति की चर्चा भी इन दोहों में मिलती है।

आधुनिक युग के छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद भी प्रेम और सौंदर्य के श्रेष्ठ कवि माने जाते हैं। प्रसाद का सौंदर्य वर्णन अनुभूतिपरक है। प्रस्तुत काव्यांश उनकी यशस्वी कृति 'कामायनी' से उद्धृत है। इसमें वे श्रद्धा के सौंदर्य को विभिन्न उपमाओं के माध्यम से व्यक्त करते हैं। प्रलयकाल के बाद मनु जब अकेले रह जाते हैं तब उन्हें श्रद्धा के दर्शन होते हैं। श्रद्धा की रूप-राशि से वे आकर्षित हो उठते हैं श्रद्धा की शरीर कांति, उसकी आकर्षक वेशभूषा एवं उसकी उदारता का वर्णन उदात्त परिवेश में किया गया है। अनेक नवीन और मौलिक उपमाओं के माध्यम से श्रद्धा के रूप का आकर्षक वर्णन प्रस्तुत करते हुए प्रसाद जिस तरह की शब्दावली का प्रयोग करते हैं वह दीप्ति और प्रकाश की ओर संकेत करने वाली है। इस रूप में प्रसाद द्वारा वर्णित सौन्दर्य प्रकाश चेतना से उद्भूत है।

सौंदर्य बोध

सोहत औढ़ैं पीतु पटु, स्याम सलोनैं गात ।
मनौं नीलमनि - सैल पर, आतपु पर्‌यौ प्रभात ॥ 1॥

सखि सोहत गोपाल कै, उर गुंजनु की माल ।
बाहिर लसत मनौ पिये, दावानल की ज्वाल ॥ 2॥

लिखन बैठि जाकी सबी, गहि-गहि गरब गरूर।
भए न केते जगत के, चतुर चितेरे कूर ॥ 3॥

मकराकृति गोपाल कैं, सोहत कुंडल कान ।
धस्यौ मनौ' हिय गढ़ समरु ड्योढ़ी लसत निसान ॥ 4॥

नीको लसत लिलार पर, टीको जरित जराय ।
छबिहिं बढ़ावत रवि मनौ, ससि मंडल में आय ॥ 5॥

झीनैं पट मैं झिलमिली, झलकति ओप अपार ।
सुर तरु की मनु सिंधु में, लसति सपल्लव डार ॥ 6॥

त्यौं-त्यौं प्यासेई रहत, ज्यौं-ज्यौं पियत अघाय।
सगुन सलोने रूप की, जु न चख-तृषा बुझाय॥ 7॥

तो पर वारौं उरबसी, सुनि राधिके सुजान ।
तू मोहन कै उर बसी, है उरबसी समान ॥ 8॥

फिरि-फिरि चित उत हीं रहतु, टुटी लाज की लाव।
अंग-अंग-छवि-झौर में, भयो भौंर की नाव ॥ 9॥

जहाँ-जहाँ ठाढ़ौ लख्यौ, स्याम सुभग - सिरमौरु ।
उनहूँ बिन छिन गहि रहतु, दृगनु अजौं वह ठौरु ॥ 10॥

- बिहारी

श्रद्धा

''कौन तुम ? संसृति - जलनिधि तीर-तरंगों से फेंकी मणि एक,
कर रहे निर्जन का चुपचाप प्रभा की धारा से अभिषेक ?
मधुर विश्रांत और एकांत - जगत का सुलझा हुआ रहस्य,
एक करुणामय सुंदर मौन और चंचल मन का आलस्य ।''
सुना यह मनु ने मधु गुंजार मधुकरी का-सा जब सानन्द,
किए मुख नीचा कमल समान प्रथम कवि का ज्यों सुंदर छंद,
एक झिटका-सा लगा सहर्ष, निरखने लगे लुटे-से कौन,
गा रहा यह सुंदर संगीत ? कुतूहल रह न सका फिर मौन।
और देखा वह सुंदर दृश्य नयन का इंद्रजाल अभिराम,
कुसुम-वैभव में लता समान चन्द्रिका से लिपटा घनश्याम।
हृदय की अनुकृति बाह्य उदार एक लंबी काया उन्मुक्त,
मधु-पवन-क्रीड़ित ज्यों शिशु साल, सुशोभित हो सौरभ - संयुक्त,

मसृण, गांधार देश के नील रोम वाले मेषों के चर्म,
ढँक रहे थे उसका वपु कांत बन रहा था वह कोमल वर्म।
नील परिधान बीच सुकुमार खुल रहा मृदुल अधखुला अंग,
खिला हो ज्यों बिजली का फूल मेघवन बीच गुलाबी रंग।
आह, वह मुख! पश्चिम के व्योम बीच जब घिरतें हो घनश्याम,
अरुण रवि- मंडल उनको भेद दिखाई देता हो छविधाम।
या कि, नव इंद्रनील लघु शृंग फोड़ कर धधक रही हो कांत,
एक लघु ज्वालामुखी अचेत माधवी रजनी में अश्रांत
घिर रहे थे घुँघराले बाल अंस अवलंबित मुख के पास,
नील घनशावक-से सुकुमार सुधा भरने को विधु के पास।
और उस मुख पर वह मुसकान! रक्त किसलय पर ले विश्राम -
अरुण की एक किरण अम्लान अधिक अलसाई हो अभिराम।
नित्य-यौवन छवि से ही दीप्त विश्व की करुण कामना मूर्ति,
स्पर्श के आकर्षण से पूर्ण प्रकट करती ज्यों जड़ में स्फूर्ति।
उषा की पहिली लेखा कांत, माधुरी से भींगी भर मोद,
मद भरी जैसे उठे सलज्ज भोर की तारक-द्युति की गोद।
कुसुम कानन अंचल में मंद-पवन प्रेरित सौरभ साकार,
रचित-परमाणु-पराग-शरीर, खड़ा हो, ले मधु का आधार।
और, पड़ती हो उस पर शुभ्र नवल मधु-राका मन की साध,
हँसी का मदविह्वल प्रतिबिंब मधुरिमा खेला सदृश अवाध।

- जयशंकर प्रसाद

◆◆◆

अभ्यास

बोध प्रश्न

अति लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. श्रीकृष्ण के हृदय में किसकी माला शोभा पा रही है ?
2. गोपाल की आकृति कैसी है ?
3. श्रद्धा का गायन-स्वर किस तरह का है ?
4. 'मधुर विश्रांत और एकांत जगत का सुलझा हुआ रहस्य' यह संबोधन किसके लिए है ?
5. माथे पर लगे टीके की तुलना किससे की गई है ?

लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. गोपाल के गले में पड़ी गुंजों की माला की तुलना किससे की गई है ?
2. श्रीकृष्ण के ललाट पर टीका की समानता किससे की गई है ?
3. मनु को हर्ष मिश्रित झटका सा क्यों लगा ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न -

1. पीताम्बरधारी श्रीकृष्ण के सौंदर्य का वर्णन कीजिए ।
2. 'सुरतरु की मनु सिंधु में, लसति सपल्लव डार' का आशय स्पष्ट कीजिए।
3. 'अरुण रवि मंडल उनको भेद दिखाई देता हो छवि धाम' का भावार्थ लिखिए ।
4. अधोलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –
   (अ) 'तो पर वारौं उरबसी ..... ह्वै उरबसी समान।'
   (ब) 'हृदय की अनुकृति' ..... सौरभ संयुक्त

काव्य सौन्दर्य –

(1) अधोलिखित काव्यांश में अलंकार पहचान कर लिखिए –
   (अ) 'धस्यो मनौ हियगढ़ समरु ड्योढ़ी लसत निसान।'
   (ब) 'विश्व की करुण कामना मूर्ति'

(2) ''फिर-फिर चित उत ही रहतु, टुटी लाज की लाव।
अंग-अंग छवि झौंर मैं, भयो और की नाव ॥'' में छंद पहचान कर उसके लक्षण लिखिए।

ध्यान दीजिए -

श्रृंगार रस – नायक, नायिका के सौंदर्य तथा प्रेम संबंधी परिपक्व अवस्था को श्रृंगार रस कहते हैं। श्रृंगार के दो भेद होते हैं। संयोग श्रृंगार और वियोग श्रृंगार।

संयोग श्रृंगार –

''एक पल मेरे प्रिया के दृग पलक
थे उठे ऊपर सहज नीचे गिरे
चपलता ने इस विकंपित पुलक से
दृढ़ किया मानो प्रणय संबंध था।''

स्थायी भाव – रति
आलंबन – प्रिया (प्रेमिका)
उद्दीपन – द्वग पलक
अनुभाव – विकंपित, नेत्रों के पलकों का ऊपर उढ़ना एवं आना गिरना
संयोग भाव – हृदय में हलचल, चपलता
संचारी श्रृंगार – जहाँ नायक और नायिका का संयोगावस्था का वर्णन होता है। वहाँ संयोग श्रृंगार होता है।

प्रश्न – संयोग श्रृंगार का एक उदाहरण रस के विभिन्न अंगों सहित लिखिए ।

वियोग श्रृंगार –

''उनका यह कुंज-कुटीर वहीं झड़ता उड़ अंशु-अबीर जहाँ
अलि, कोकिल, कीर, शिखी सब हैं सुन चातक की रट पीव कहाँ?
अब भी सब साज-समाज वही तब भी सब आज अनाथ यहाँ
सखि'' जा पहुँचे सुध-संग कहीं यह अंध सुगंध समीर वहाँ''

उपर्युक्त उदाहरण में विरहिणी यशोधरा की विरह दशा का वर्णन किया गया है। प्रस्तुत पंक्तियों में

स्थायी भाव – रति

आश्रय – यशोधरा

आलम्बन – सिद्धार्थ

उद्दीपन – कुंज-कुटीर, कोकिल, भौरों और पपीहे की ध्वनियाँ

अनुभाव – सखी से विषाद भरे स्वर में कथन

संचारीभाव – स्मृति, मोह, विषाद

वियोग शृंगार – जिस रचना में नायक और नायिका का विरह वर्णन हो वहाँ वियोग शृंगार होता है।

प्रश्न – वियोग शृंगार को परिभाषित करते हुए उदाहरण देकर रस के अंगो सहित लिखिए ।

योग्यता विस्तार

1. नीति संबंधी दोहों का संकलन कर चार्ट बनाएँ एवं उन्हें कक्षा में टाँगिए।
2. मात्रिक छंदों के उदाहरण छाँटकर एक हस्तलिखित पुस्तिका तैयार कीजिए।
3. दोहा – चौपाई पर आधारित अंत्याक्षरी का आयोजन कीजिए।
4. आपके आस-पास अनेक मूक पशु-पक्षी रहते हैं, आप उनके प्रति अपने प्रेम का भाव कैसे प्रकट करते हैं।

शब्दार्थ

सोहत = शोभायमान। **सलोने** = सुंदर। **आतप** = धूप। **दावानल** = जंगल की आग। **मकराकृति** = मगर के आकार की। **निसान** = ध्वज। **समरु** = कामदेव। **भौंर** = भँवर। **चख** = आँखे। **उर बसी** = हृदय पर पहनी जाने वाली माला। **उरबसी** = हृदय में बसी हुई। **उरबसी** =उर्वशी अप्सरा। **ओप** = कांति, आभा। **सुरतरु** = कल्पवृक्ष। **लसति** = सुशोभित है। **सपल्लव** = पत्रों सहित। **दृगनु** = आँखों में।

संसृति = संसार। **जलनिधि** = समुद्र। **तरंग** = लहर। **निर्जन** =जन रहित, सुनसान। **प्रभा**=प्रकाश। **मधुगुंजार** = मीठी आवाज। **मधुकरी** = भौंरी। **सहर्ष** = प्रसन्नता सहित। **निरखने** = देखने। **कुतूहल** = जिज्ञासा। **इंद्रजाल** = जादू। **अभिराम** = सुंदर। **अनुकृति** = प्रतिबिंब। **उन्मुक्त** = स्वतंत्र। **शिशुसाल** = साल वृक्ष का पौधा। **सौरभ- संयुक्त** = सुगंध से भरा हुआ। **वपुकांत** = सुंदर देह। **वर्म** = कवच। **लघुशृंग** = छोटी पहाड़ी। **अश्रांत** = बिना थके। **अंस** = कंधा। **अवलंबित** = सहारे, टिके हुए। **घनशावक** = बादल का टुकड़ा। **विधु** = चंद्रमा। **रक्त किसलय** = लाल रंग के नए पत्ते (ओंठ) । **अम्लान** = बिना मलीन हुए ताजी। **अरुण** = सूर्य। **स्फूर्ति** = चेतना। **लेखा** = किरण। **भोर की तारक द्युति** = सुबह के तारों की चमक। **कानन** = जंगल। **मधुराका** = पूर्णिमा की रात। **खेला** = लहर।

पाठ - 4

नीति-धारा

गिरिधर

कवि परिचय – गिरिधर के जीवन और समय के सम्बंध में कोई प्रामाणिक जानकारी उपलब्ध नहीं है। आपने अधिकांश कुण्डलियाँ अवधी भाषा में लिखी हैं । इससे अनुमान लगता है कि ये इलाहाबाद के आस-पास के रहने वाले थे और भाट जाति के थे । शिवसिंह सेंगर ने इनका जन्म सन् 1713 तथा रचनाकाल 18 वीं सदी माना है। आपकी कुण्डलियाँ हस्त लिखित पोथियों के रूप में मिलती हैं। जिनके दस संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। सबसे बड़े संग्रह में 457 कुण्डलियाँ हैं। इन्होंने कुछ दोहे, सोरठे और छप्पय भी लिखे।

जन-जीवन में कवि गिरिधर के बहुत अधिक प्रचार का कारण इनका दैनिक जीवन के लिए उपयोगी एवं महत्वपूर्ण बातों का सरल और सीधी भाषा-शैली में कथन है। इनमें अपने अनुभव पर आधारित नई बातों के साथ पारम्परिक कथन भी है।

भोलानाथ तिवारी ने 'हिन्दी नीति काव्य संग्रह' में पर्याप्त मात्रा में नीति-काव्य लिखने वाले कवियों में इनकी गणना की है।

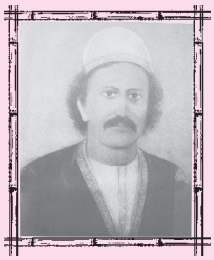

कवि परिचय – आधुनिक हिन्दी साहित्य के जन्मदाता और भारतीय नवोत्थान के प्रतीक हरिश्चन्द्रजी का जन्म सन् 1850 ई. को काशी में हुआ था। आपने अपनी प्रतिभा, कुशाग्र बुद्धि और अद्‌भुत स्मरण-शक्ति के बल पर मराठी, बंगला, गुजराती, मारवाड़ी, पंजाबी, उर्दू आदि अनेक भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया। लम्बे देशाटन से उन्होंने कई स्थलों के स्थानीय जीवन-क्रम एवं वहाँ की साहित्यिक गतिविधियों का अध्ययन किया। देश-प्रेम, मातृभाषा – हिन्दी प्रेम तथा इनके विकासार्थ की गईं सेवाओं के कारण सन् 1880 ई. में आपको 'भारतेन्दु' की उपाधि से विभूषित किया गया। 06 जनवरी 1885 ई. को पैंतीस वर्ष की अल्पायु में ही आपका गोलोकवास हो गया।

भारतेन्दु जी का काव्यक्षेत्र व्यापक है। भक्ति और शृंगार आपकी कविता का प्रधान रस है। भाव-प्रवणता, देश-प्रेम और समाज-सुधार का स्वर आपकी रचनाओं में बहुत सशक्त है। आपका शृंगार रीतिकालीन कवियों से भिन्न एवं शिष्ट है। राष्ट्र-प्रेम-भाव आपके हृदय सिंधु में हिलोरें मारता है। आपकी रचनाएँ छन्दबद्ध हैं। छप्पय, कुंडलियाँ, हरिगीतिका आदि अनेक छन्दों का प्रयोग आपकी रचनाओं में हुआ है। आपने लोकछन्दों – लावनी, ख्याल और कजरी का भी उपयोग किया है। काव्य भाषा ब्रज है, किन्तु शनैः-शनैः आपने खड़ी बोली-काव्य को जन्म दिया, सजाया और सँवारा है। लोकोक्तियाँ और मुहावरों का यथास्थान प्रयोग कर अलंकारिक शैली को अपनाया है। उपमा, रूपक, अनुप्रास और श्लेष आपके प्रिय अलंकार हैं।

आपके द्वारा 'कविवचन सुधा', 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका', 'नवोदिता', तथा 'बाल-बोधिनी', आदि पत्रों का प्रकाशन किया गया। प्राचीन और नवीन युग के संधि-स्थल पर दोनों युगों के उपयोगी विचारों का आपने उदारता-पूर्वक स्वागत किया।

भारतेन्दुजी की मौलिक नाट्य – रचनाओं में 'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति', 'चन्द्रावलि नाटिका', 'विषस्य विषमौषधम्', 'भारत दुर्दशा', और 'अंधेर नगरी' प्रसिद्ध हैं। 'पूर्ण प्रकाश' और 'चन्द्रप्रभा' आपके प्रसिद्ध सामाजिक उपन्यास हैं। आपकी अनेक काव्य कृतियों में भक्ति-प्रेम, शृंगार और नीति सम्बन्धी रचनाएँ हैं। 'प्रेम माधुरी', 'प्रेम सरोवर', 'प्रेमतरंग', 'प्रेमप्रलाप', 'सुन्दरी तिलक (सवैया संग्रह)' और 'पावस भक्ति संग्रह' प्रसिद्ध कृतियाँ हैं। वे पाश्चात्य सभ्यता के अंधानुकरण, हिन्दी के प्रति उदासीनता और भारतीय जीवन की बुराइयों के प्रबल विरोधी, देशभक्त कवि थे।

भारतेन्दुजी युगान्तकारी रचनाकार थे। हिन्दी उन्नायकों में आपका स्थान सर्वोच्च है।

केन्द्रीय भाव

नीतिकाव्य जीवन-व्यवहार को सुगम बनाने का आधार है। नीतिकाव्य सृजित करने में व्यावहारिक अनुभवों का महत्वपूर्ण स्थान होता है। व्यक्ति इन अनुभवों को स्वयं के क्रिया-कलापों से तथा दूसरों के द्वारा अर्जित एवं कहे गए मन्तव्यों से ही अर्जित करता है। स्वयं द्वारा अर्जित अनुभवों से यद्यपि व्यक्ति आत्म निर्भर और संघर्षशील बनता है, तथापि दूसरों के अनुभव उसे सहजतापूर्वक जीवन को समझने में सहायक होते हैं। यह अनुभव यदि काव्य के रूप में होते हैं, तो वे मुहावरों जैसे हो उठते हैं। अधिकांश नीति कथन परक उक्तियों में जो सुग्राह्यता और सरसता है, वह उन्हें मुहावरों की कोटि में ले जाने वाली है। हजारों वर्षों से नीति परक उक्तियाँ मनुष्य को जीवन के अँधेरों में प्रकाश की किरण बनकर उसे मार्ग दिखाती रही हैं, जीवन जीने का तरीका सिखाती रही हैं। इस स्तर पर नीति काव्य शिक्षा के उद्देश्य को पूर्ण करने वाला बन जाता है। नीतिकाव्य जीवन सुधार का लक्ष्य लेकर चलता है। नीति काव्य का विचार पक्ष प्रबल होता है। एक तरह से नीतिकाव्य सद्विचारों का कोष है। युगानुरूप आचरण की शिक्षा भी नीतिकाव्य प्रदान करता है। नीतिकाव्य का एक उद्देश्य उच्च सामाजिक मूल्यों की स्थापना करना भी है। इस तरह से नीति काव्य व्यक्ति और समाज के उन्नत अनुभवों का संप्रसारण करने वाला काव्य है।

हिन्दी साहित्य में नीतिकाव्य की लंबी परम्परा है। प्राय: प्रत्येक कवि ने अपने अनुभवों को इस तरह से नीति कथनों में सँजोया है भले ही ऐसी उक्तियाँ अधिक न हों। किन्तु यह निश्चित है कि सभी युगों का काव्य अपने नीति कथनों के कारण पाठक के जीवन संघर्षो को कम करने में सक्षम रहा है। तुलसी, कबीर, सूर, जायसी आदि भक्तिकालीन कवियों ने नीतिकथनों को महत्व प्रदान किया है। इस युग में रहीम और गिरिधर जैसे कवि भी सक्रिय रहे हैं, जिनकी कविता में नीति का स्थान केन्द्रीय है।

गिरिधर कविराय ने अपनी कुंडलियों में तो जैसे नीति को ही महत्व प्रदान किया है। उनकी कुंडलियाँ तो नीति के अमृतघट हैं। जीवन के अनेक अनुभवों की उन्होंने कुंडलियों में सँजोया है। प्रस्तुत कुंडलियों में उन्होंने अतीत की असफलताओं से बार-बार दुखी न होने के लिए कहा है। कर्मचेतना के सूत्र वर्तमान को महत्वपूर्ण मानने में छिपे हैं। अपने द्वारा किए गए कामों का ढ़िढोरा नहीं पीटना चाहिए। यदि असफलता हाथ लगती है तो संसार हँसी करने लगता है। प्रत्येक कार्य करने के पूर्व विचार कर लेना जरूरी है। जो बिना विचारे और बिना पूर्व योजना बनाए कार्य करते हैं - वे अक्सर अपने कार्य में विफल हो जाते हैं और परेशान होते हैं। सम्पत्ति के बढ़ने पर अभिमान नहीं करना चाहिए। अपने भीतर गुणों को विकसित करके समाज में सम्मान पाया जा सकता है।

आधुनिक युग में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र बहुआयामी रचनाकार हैं। उन्होंने नाटक, काव्य, निबंध आदि सभी विधाओं में रचना की है। ये समाजोन्मुखी चिंतक कवि हैं, इसलिए उनकी कविताओं में नीतिकथन यत्र-तत्र सर्वत्र सुलभ हैं। संकलित दोहों में उन्होंने स्पष्ट किया है कि केवल पद पाने से प्रतिष्ठा नहीं मिलती है। परोपकार करने पर ही सम्मान मिलता है। एकता का ही महत्व है, कठिन से कठिन काम एकता से संभव हो जाते हैं। भारत के विकास के लिए भारतवासियों को वैर-भाव छोड़ना होगा। अपनी भाषा, अपना धर्म ही सुख देने वाले हैं। जहाँ योग्यता और अयोग्यता को समझने का विवेक न हो वहाँ सुख और समृद्धि नहीं रह पाते। नीति काव्य के इन सभी अंशों में सहज उक्तियों का वैभव फैला हुआ है।

गिरिधर की कुंडलियाँ

बीती ताहि बिसारि दे, आगे की सुधि लेइ।
जो बनि आवै सहज में, ताही में चित्त देइ॥
ताही में चित्त देइ, बात जोई बनि आवै।
दुर्जन हँसे न कोइ, चित्त में खता न पावै॥
कह गिरिधर कविराय, यहै करु मन - परतीती।
आगे की सुख समुझि, हो, बीती सो बीती ॥1॥

साईं अपने चित्त की, भूलि न कहिए कोइ।
तब लग मन में राखिए, जब लग कारज होइ॥
जब लग कारज होइ, भूलि कबहूँ नहिं कहिए।
दुरजन हँसे न कोई आप सियरे ह्वै रहिए ॥
कह गिरिधर कविराय, बात चतुरन की ताईं।
करतूती कहि देत, आप कहिए नहि साईं ॥2॥

बिना बिचारे जो करे, सो पीछे पछिताय ।
काम बिगारै आपनो, जग में होत हँसाय॥
जग में होत हँसाय, चित्त में चैन न पावै।
खान पान सनमान, राग-रंग मनहिं न भावै॥
कह गिरिधर कविराय, दु:ख कछु टरत न टारे।
खटकत है जिय माहिं, कियो जो बिना बिचारे॥3॥

दौलत पाय न कीजिए, सपने में अभिमान।
चंचल जल दिन चारि को, ठाउँ न रहत निदान॥
ठाउँ न रहत निदान, जियत जग में जस लीजै।
मीठे वचन सुनाय, विनय सबही की कीजै॥
कह गिरिधर कविराय, अरे यह सब घट तौलत।
पाहुन निसि दिन चारि, रहत सबही के दौलत॥4॥

गुन के गाहक सहस नर, बिनु गुन लहै न कोय।
जैसे कागा कोकिला, शब्द सुनै सब कोय ॥
शब्द सुनै सब कोय, कोकिला सबै सुहावन।
दोऊ को इक रंग, काग सब भए अपावन॥
कह गिरिधर कविराय, सुनो हो ठाकुर मन के।
बिनु गुन लहै न कोय, सहस नर गाहक गुन के॥5॥

- गिरिधर

नीति अष्टक

मान्य योग्य नहिं होत कोऊ कोरो पद पाए।
मान्य योग्य नर ते जे केवल परहित जाए ॥1॥

बिना एक जिय के भए, चलिहैं अब नहिं काम ।
तासों कोरो ज्ञान तजि उठहु छोड़ि बिसराम ॥2॥

बैर फूट ही सों भयो सब भारत को नास ।
तबहुँ न छाड़त याहि सब बँधे मोह के फाँस ॥3॥

कोरी बातन काम कछु चलिहैं नाहिन मीत ।
तासों उठि मिलि के करहु बेग परस्पर प्रीत ॥4॥

निज भाषा, निज धरम, निज मान करम ब्यौहार ।
सबै बढ़ावहु बेगि मिलि कहत पुकार – पुकार ॥5॥

करहुँ बिलम्ब न भ्रात अब उठहु मिटावहु सूल ।
निज भाषा उन्नति करहु प्रथम जो सबको मूल ॥6॥

सेत सेत सब एक से जहाँ कपूर कपास ।
ऐसे देस कुदेस में कबहुँ न कीजै बास ॥7॥

कोकिल वायस एक सम पण्डित मूरख एक।
इन्द्रायन दाड़िम विषय, जहाँ न नेक विवेक ॥8॥

– **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र**

◆◆◆

अभ्यास

बोध प्रश्न -

अति लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. गिरिधर के अनुसार हमें क्या भूल जाना चाहिए ?
2. कोयल को उसके किस गुण के कारण पसंद किया जाता है ?
3. गिरिधर द्वारा प्रयुक्त छंद का नाम लिखिए।
4. व्यक्ति सम्मान योग्य कब बन जाता है।
5. भारतेन्दु के अनुसार भारत की दुर्दशा का प्रमुख कारण क्या है ?

लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. कवि गिरिधर के अनुसार अपने मन की बात को कब तक प्रकट नहीं करना चाहिए ?
2. धन-दौलत का अभिमान क्यों नहीं करना चाहिए ?
3. कवि ने गुणवान के महत्व को किस प्रकार रेखांकित किया है ?
4. भारतेन्दु जी ने कोरे ज्ञान का परित्याग करने की सलाह क्यों दी है ?
5. सम्माननीय होने के लिए किन गुणों का होना आवश्यक है ?
6. 'उठहु छोड़ि बिसराम' का आशय स्पष्ट कीजिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

1. बिना विचारे काम करने में क्या हानि होती है ? समझाइए ।
2. कौआ और कोयल के उदाहरण से कवि जो सन्देश देना चाहता है उसे अपने शब्दों में लिखिए।
3. पाठ में संकलित भाषा संबंधी दोहों के माध्यम से भारतेन्दुजी क्या सन्देश देना चाहते हैं ?
4. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की काव्य प्रतिभा पर संक्षिप्त प्रकाश डालिए ।
5. निम्नलिखित पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

(अ) ''बिना बिचारे जो करे सो पीछे पछिताय।
× × ×
खटकत है जिय माहि, कियौ जो बिना बिचारे॥''

(ब) ''गुन के गाहक सहस नर बिनु गुन लहै न कोय।
× × ×
बिनु गुन लहै न कोय, सहस नर गाहक गुन के ॥''

(स) ''मान्य योग्य नहिं होत कोऊ कोरो पद पाए ।
मान्य योग्य नर ते जे केवल परहित जाए ॥''

(द) ''बैर फूट ही सों भयो सब भारत को नास।
तबहु न छाड़त याहि सब बँधे मोह के फाँस॥''

ध्यान दीजिए -

यह भी जानें -

आपने गिरिधर की कुंडलियाँ पढ़ी। गिरिधर की कुंडलियों में आप मात्राएँ गिनकर देखिए –

ऽ ऽ ऽ। । ऽ । ऽ ऽ ऽ ऽ । । ऽ। (13+11=24) दोहा छंद

''बीती ताहि बिसारि दे, आगे की सुधि लेइ।
जो बनि आवै सहज में, ताही में चित्त देइ॥

ऽ ऽ ऽ । । ऽ। ऽ। ऽ ऽ । । ऽ ऽ (11+13=24) रोला छंद

ताही में चित्त देइ, बात जोई बनि आवै।
दुर्जन हँसे न कोइ, चित्त में खता न पावै॥
कहै गिरिधर कविराय, यहै करू मन-परतीती।।
आगे की सुख समुझि हो, बीती सो बीती॥

उपर्युक्त प्रथम दो पंक्तियों में 13 व 11 पर यति है, आप जानते हैं, कि इसे दोहा छंद कहते हैं। कुंडलियाँ की तीसरी पंक्ति का प्रथम चरण दोहा छंद के अंतिम चरण की पुनरावृत्ति है, अत: बाद की चार पंक्तियों में 11-13 पर यति है, 11-13 पर यति होना, पंक्ति में कुल 24 मात्राओं का आना तथा अंत में दो गुरु का होना, इसे रोला छंद बनाता है, अत: हम कह सकते हैं कि -

रोला छंद - दोहा और रोला छन्द मिलकर कुण्डलिया छन्द बनता हैं इसमें दोहा का अन्तिम चरण रोला का प्रथम चरण होता है कुण्डलिया जिस शब्द से प्रारंभ होता है उसी शब्द से समाप्त होता है।

यह भी जानें -

''करते अभिषेक पयोद हैं, बलिहारी इस देश की।
हे मातृभूमि ! तू सत्य ही, सगुण मूर्ति सर्वेश की ॥''
उपर्युक्त पंक्तिया उल्लाला छंद का उदाहरण है।

उल्लाला - यह एक मात्रिक छंद है। इसके प्रत्येक चरण में 15 व 13 की यति पर कुल 28 मात्राएँ होती हैं। इसे उल्लाला छंद कहते हैं।

प्रश्न - 'उल्लाला' को परिभाषित करते हुए उदाहरण सहित समझाइए।

योग्यता विस्तार

1. अन्य कवियों की नीति संबंधी काव्य पंक्तियाँ खोजकर लिखिए।
2. अपने शिक्षक की सहायता से- संयोग श्रृंगार, वियोग श्रृंगार, हास्य, करुण एवं वीर रस के उदाहरणों की सूची तैयार कीजिए।
3. अपनी कक्षा की दीवारों पर कुछ नीति सम्बन्धी दोहे कार्ड शीट पर लिखकर लगाइए।
4. कक्षा में स्वरचित काव्य पाठ प्रतियोगिता आयोजित कीजिए।

शब्दार्थ

बिसारि दे = भुलादे। **सुधि**=याद। **खता**=दु:ख। **परतीती**=विश्वास। **कारज**=कार्य काम। **सियरे**=ठंडा, शांत। **करतूती**=कर्म। **पाहुन**=अतिथि। **दौलत**=धन, सम्पत्ति। **सहस**=हजार।

बिसराम=विश्राम। **फाँस**=फंदा। **वेग**=तुरन्त। **विलम्ब**=देरी। **सूल**=शूल, काँटा। **सेत**=सफेद। **कुदेस** = बुरादेश। **वायस**=कौआ। **दाड़िम**=अनार। **इद्रायन**=एक प्रकार का कड़वा फल और वृक्ष।

प्रकृति चित्रण

कवि परिचय – बिहारी के बाद पद्माकर रीतिकाल के सबसे अधिक लोकप्रिय कवि हुए हैं। इनका जन्म सन् 1753 में हुआ। ये तैलंग ब्राह्मण थे और बाँदा निवासी मोहनलाल भट्ट के पुत्र थे। बाद में पद्माकर के पिता मोहनलाल भट्ट सागर में बस गए थे। इनके परिवार का वातावरण कवित्वमय था। इनके पिता के अलावा इनके कुल के अन्य अनेक व्यक्ति भी कवि थे। अत: इनके वंश का नाम ही 'कवीश्वर' पड़ गया था। पद्माकर जी मात्र 9 वर्ष की उम्र में ही कविता लिखने लगे थे। ये अनेक राजदरबारों में रहे। बूँदी दरबार की ओर से उन्हें बहुत सम्मान, दान आदि मिला। पन्ना महाराज ने इन्हें बहुत से गाँव दिए। जयपुर नरेश से इन्हें 'कविराज शिरोमणी' की उपाधि मिली।

राजाओं की प्रशंसा में उन्होंने 'हिम्मत बहादुर विरुदावली' 'प्रताप सिंह विरुदावली' और 'जगत विनोद' की रचना की। जीवन के अन्तिम समय में इन्हें कुष्ठ रोग हो गया। उससे मुक्ति के लिए गंगाजी की स्तुति में 'गंगा लहरी' लिखते हुए यहीं उनका 80 वर्ष की आयु में सन् 1833 में निधन हो गया।

पदमाकर जी के रचित ग्रन्थ है – 'पद्माभरण', 'जगद्विनोद', 'आलीशाह प्रकाश', 'हिम्मत बहादुर विरुदावली', 'प्रतापसिंह विरुदावली', 'प्रबोध पचासा', 'गंगा लहरी' और 'राम रसायन'।

पद्माकर जी का सम्पूर्ण जीवन राजाश्रयों में ठाट-बाट पूर्वक बीता। इन्होंने सजीव मूर्तविधान करने वाली कल्पना के सहारे प्रेम और सौन्दर्य का मार्मिक चित्रण किया है। जगह-जगह लाक्षणिक शब्दों के प्रयोग द्वारा वे सूक्ष्म से सूक्ष्म भावानुभूतियों को सहज ही मूर्तिमान कर देते हैं। इनका शृंगार सरस एवं सहज अनुभूति से ओतप्रोत है। भाव-कल्पना के आडम्बर में वे उलझे नहीं है। अनुभावों और भावों के चित्रण तो अत्यधिक मर्मस्पर्शी हैं।

पद्माकर का प्रकृति-चित्रण विशेष रूप से षट्-ऋतु वर्णन बहुत प्रसिद्ध है। इनके ऋतु वर्णन में जीवंतता और चित्रात्मकता के दर्शन होते हैं। अनुप्रास द्वारा ध्वनिचित्र खड़ा करने में ये अद्वितीय हैं। इनमें बिहारी सा वाग्वैग्ध एवं मतिराम की सी भाषा की स्वाभाविक प्रवाहमयता के दर्शन होते हैं। इनकी भाषा में लाक्षणिकता का भी सुन्दर पुट है। सूक्तियों में तो इनकी समता का रीतिकालीन शायद ही कोई कवि है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इनकी भाषागत शक्ति और अनेक रूपता की तुलना तुलसीदास की भाषागत विविधता से की है। यह उनके काव्य की बहुत बड़ी शक्ति की ओर संकेत करता है।

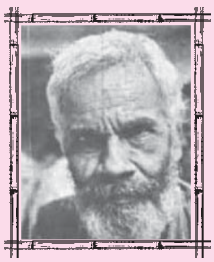

कवि परिचय – नागार्जुन का जन्म बिहार के दरभंगा जिले के सतलखा (ननिहाल) नामक ग्राम में सन् 1911 ई. को हुआ था। इनके पिता तरौनी गाँव में रहते थे। नागार्जुन का बचपन का नाम वैद्यनाथ मिश्र था। जीवन के अभावों ने आगे चलकर इनके संघर्षशील व्यक्तित्व का निर्माण किया। व्यक्तिगत दु:ख ने इन्हें मानवता के दु:ख को समझने की क्षमता प्रदान की। घुमक्कड़ी और फक्कड़पन नागार्जुन के व्यक्तित्व की दो प्रमुख विशेषताएँ हैं। इन्होंने सम्पूर्ण भारत का भ्रमण किया है, फलत: इन्हें एक जगह टिककर काम करने का अवसर नहीं मिला।

इन्होंने मैथिली और हिन्दी दोनों में रचनाएँ लिखीं। 1935 में 'दीपक' (हिन्दी मासिक) और 1942-43 में विश्वबंधु (साप्ताहिक) पत्रिका का संपादन किया। नागार्जुन को अपने राजनीतिक कार्यकलापों के कारण कई बार जेल की यात्रा भी करनी पड़ी।

इनकी मुख्य काव्य-कृतियाँ हैं – 'युगधारा', 'प्यासी पथराई-आँखे', 'सतरंगे पंखों वाली' और 'भस्मांकुर' (खण्डकाव्य)। इसके अलावा कई कविताएँ अप्रकाशित हैं। नागार्जुन ने कई महत्वपूर्ण उपन्यास भी लिखे हैं, जिनमें 'बलचनामा' 'रतिनाथ की चाची', 'नई पौध', 'कुम्भीपाक', 'उग्रतारा' आदि प्रमुख हैं।

नागार्जुन जीवन के, धरती के, जनता के, तथा श्रम के गीत गाने वाले ऐसे कवि हैं जिनकी रचनाओं को किसी वाद की सीमा में नहीं बाँधा जा सकता। अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व की भाँति इन्होंने अपनी कविता को भी स्वतंत्र रखा है। सहजता नागार्जुन के काव्य की विशेषता है। जटिल से जटिल भाव भी नागार्जुन की लेखनी से निकलकर सहज प्रभाव डालने में सफल हो जाते हैं।

स्वाधीन भारत की कसमसाती भारतीय जनता विशेषत: किसान जीवन की पीड़ाओं को नागार्जुन ने अपनी कविता की विषयवस्तु बनाया है। उनकी काव्य भाषा में एक किसान की सी साफगोई और निर्मम खरापन है। इनकी भाषा-शैली सरल, स्पष्ट तथा मार्मिक प्रभाव डालने वाली है। काव्य विषय इनके प्रतीकों के माध्यम से स्पष्ट उभरकर आते हैं। इनके गीतों में जन-जीवन का संगीत है।

केन्द्रीय भाव

मानवीय संवेदनाओं के संप्रेषण में प्रकृति ने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है। प्रकृति ने मनुष्य को न केवल व्यापक दृष्टिकोण प्रदान किया, बल्कि उसने मनुष्य के सौंदर्य-बोध को भी विस्तारित किया। प्रकृति ने मानवीय भावों और विचारों को उदात्त बनाया है। मानवीय जीवन के आधार मूल्यों की अवधारणा में प्रकृति का महत्वपूर्ण योगदान है। प्रकृति मनुष्य की सद्चारिणी शक्ति है। काव्य के क्षेत्र में प्रकृति कवियों को सर्वाधिक प्रभावित करने वाली रही है। कवियों ने कहीं प्रकृति को आधार बनाकर स्वतंत्र दृश्यांकन किया है तो कहीं प्रकृति मानवीय भावना को उद्दीप्त करने वाली रही है, कहीं प्रकृति स्वयं मनुष्य जैसा आचरण करने वाली बन जाती है। इस तरह कविता में प्रकृति अनेक रूपों में प्रस्तुत होती रही है और कविता को सरस तथा आकर्षक रूप प्रदान करती रही है, हिन्दी काव्य साहित्य में प्रकृति सर्वत्र अपनी उपस्थिति से कविता को रमणीय बनाती रही है। कविता जब प्रकृति के साथ रहती है, तब वह सृष्टि की संपूर्णता का बोध भी जगाती रहती है इस आधार पर हिन्दी काव्य साहित्य में प्रकृति समिष्टिबोध जगाने में सदैव समर्थ रही है। जायसी, कबीर, तुलसीदास, सूरदास, पद्माकर, देव, मतिराम, श्रीधर पाठक, रामनरेश त्रिपाठी, प्रसाद, पंत, नागार्जुन आदि कवियों ने अपने काव्य में विस्तार से प्रस्तुत किया है।

पद्माकर रीतिकाल के प्रमुख कवियों में से हैं। उन्होंने अपनी ऋतु-वर्णनपरक कविताओं में प्रकृति का बेहद आकर्षक वर्णन किया है। प्रस्तुत काव्याशों में पद्माकर ने वसंत, वर्षा और शरद ऋतु का अत्यंत प्रभावशाली चित्रण किया है। वसंत जब आता है तब केवल प्रकृति ही प्रसन्न नहीं होती है, प्राकृतिक उपादानों को तो वसंत प्रफुल्लित करता ही है। वह मानवीय चेतना में भी उल्लास भर देता है इसलिए कुंजों-कछारों में, देश-देशांतरों में विस्तारित वसंत बृज की गोपियों को भी उल्लासमय बना देता है, वसंत ने केवल गोपियों को प्रभावित नहीं किया है, उसने छबीले गोपों को भी अनुरंजित कर दिया है, पक्षी गण सभी तरह से मुखरित होने लगे हैं। समूची सृष्टि वसंत के रंग में रंग उठी है और सबके तन और मन उत्कंठाओं से भर गए हैं। बर्षा ऋतु का वर्णन पद्माकर ने विरह को बढ़ाने वाली ऋतु के रूप में किया है। बिजली चमक रही है, लौंग की लताएँ लावण्यमय हो उठी हैं। विविध हवाएँ बह रही हैं घटाएँ घिर आई हैं और विरहिणी का धैर्य समाप्त हो रहा है। शरद ऋतु की विशद्ता का आकर्षक वर्णन पद्माकर के काव्य में प्राप्त होता है। वृंदावन में यमुना के तट पर विस्तारित रास मंडल में शरद का अनूठा विस्तार है। कृष्ण के मयूर मुकुट पर भी शरद की उजास प्रकट हो रही है सभी छंदों में प्रकृति परक हलचलों के साथ, प्राकृत दृश्यों की अनूठी छटा प्राप्त होती है। प्रकृति के साथ, मानवीय भावनाओं का भी हृदयग्राही वर्णन इन दृश्यों में है।

नागार्जुन आधुनिक युग के प्रकृति-प्रेमी कवि हैं- नागार्जुन ने प्रकृति को अनेक रूपों में अपने काव्य में प्रकट किया है। नागार्जुन यायावर कवि थे, इसलिए उनके काव्य में प्रकृति चेतना का व्यापक वर्णन है। प्रस्तुत कविता में उन्होंने हिमालय पर घिरते बादलों के विभिन्न रूपों के साथ उनके द्वारा संवेदित विभिन्न संदर्भों को अभिव्यक्त किया है। कमल, हंस, मृग, आदि बादलों के आगमन से अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हैं। हिमालय की शिखर मालाओं और बादलों का सौन्दर्य दर्शनीय है। संपूर्ण कविता में पावस क्षणों में मेघों की सुरम्य छवियों का चित्रण है। भाषा में चित्रात्मकता है।

ऋतु वर्णन

कूलन में केलि में कछारन में कुंजन में,
क्यारिन में कलित कलीन किलकंत है।
कहैं पदमाकर परागन में पौन में,
पातन में पिक में पलासन पगंत है।
द्वार में दिसान में दुनी में देस देसन हूँ में,
देखौ दीप दीपन में दीपत दिगंत है।
बीथिन में ब्रज में नवेलिन में बेलनि में,
बगन में बागन में बगर्‌यो बसंत है ॥ 1 ॥

और भाँति कुंजन में गुँजरत भीरे भौंर,
औरे डौर झौरन पैं बोरन के वै गए।
कहै पद्‌माकर सु औरे भाँति गलियान,
छलिया छबीले छैल औरे छ्वै छ्वै गए।
औरै भाँति बिहग समाज में अवाज होति,
ऐसे रितुराज के न आज दिन द्वै गए।
औरे रस औरै रीति औरै राग औरै रंग,
औरै तन औरे मन औरे बन ह्वै गए ॥ 2 ॥

चंचला चलाकैं चहूँ ओरन तें चाह भरी,
चरजि गई ती फेरि चरजन लागी री।
कहै पदमाकर लवंगन की लोनी लता,
लरजि गई ती फेरि लरजन लागी री।
कैसे धरौं धीर वीर त्रिबिधि समीरै तन,
तरजि गई ती फेरि तरजन लागी री।
घुमड़ि घुमड़ि घटा धन की घनेरों अबै,
गरजि गई तो फेरि गरजन लागी री ॥ 3 ॥

तालन पै ताल पै तमालन पै मालन पै,
वृन्दावन बीथिन बहार बंसीबट पै।
कहै पदमाकर अखंड रासमंडल पै,
मंडित उमंड महा कालिंदी के तट पै।
छिति पर छान पर छाजत छतान पर,
ललित लतान पर लाड़िली की लट पै।
भाई भली छाई यह सरद जुन्हाई जिहि,
पाई छबि आजु ही कन्हाई के मुकुट पै ॥ 4 ॥

– पद्‌माकर

बादल को घिरते देखा है

अमल धवल गिरि के शिखरों पर,
बादल को घिरते देखा है।
छोटे-छोटे मोती जैसे
उसके शीतल तुहिन कणों को,
मानसरोवर के उन स्वर्णिम
कमलों पर गिरते देखा है,
बादल को घिरते देखा है।

तुंग हिमालय के कन्धों पर
छोटी बड़ी कई झीलें हैं,
उनके श्यामल नील सलिल में
समतल देशों से आ-आकर
पावस की ऊमस से आकुल
तिक्त-मधुर बिस-तंतु खोजते
हंसों को तिरते देखा है।
बादल को घिरते देखा है।

ऋतु बसन्त का सुप्रभात था
मंद-मंद था अनिल बह रहा,
बालारुण की मृदु किरणें थी
अगल-बगल स्वर्णाभ शिखर थे
एक दूसरे से विरहित हो
अलग-अलग रहकर ही जिनको
सारी रात बितानी होती,
निशा काल से चिर-अभिशापित
बेबस उन चकवा-चकई का
वंद हुआ क्रन्दन फिर उनमें
उस महान सरवर के तीरे
शैवालों की हरी दरी पर
प्रणय-कलह छिड़ते देखा है।
बादल को घिरते देखा है।

दुर्गम बर्फानी घाटी में
शत-सहस्त्र फुट ऊँचाई पर
अलख-नाभि से उठने वाले
निज के ही उन्मादक परिमल
के पीछे धावित हो होकर